SHODHPATRA: INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENCE AND HUMANITIES
E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 3, Issue- 5 | May 2026

सामाजिक रीति-रिवाजों के दौरान प्रचलित विशिष्ट कीर्तन शैलियाँ

डॉ. शुप्रीत सिंह
सहायक प्रोफ़ेसर, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर

सारांश

इस शोध-पत्र में गुरमत संगीत की गायक शैलियों का अध्ययन सामाजिक रीति-रिवाजों के संदर्भ में किया गया है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि सिख धर्म में जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रत्येक जीवन-चरण में गुरबाणी कीर्तन का विशेष स्थान है। विभिन्न सामाजिक अवसरों जैसे जन्म, सगाई, विवाह (आनंद कारज), मृत्यु संस्कार, गृह प्रवेश, नए कार्य की शुरुआत तथा शैक्षणिक सत्रारंभ पर विशिष्ट शबदों का गायन एक स्थापित परंपरा के रूप में प्रचलित है। अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि गुरमत संगीत केवल धार्मिक अनुष्ठान का अंग नहीं, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को आध्यात्मिकता से जोड़ने का माध्यम भी है। प्रत्येक अवसर के अनुरूप चुने गए शबद न केवल भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हैं, बल्कि व्यक्ति को ईश्वर से जोड़ते हुए जीवन के मूल्यों—जैसे कृतज्ञता, संतोष, वैराग्य और नाम-स्मरण की ओर प्रेरित करते हैं। इसके अतिरिक्त, रैन-सभाई कीर्तन जैसी परंपराएँ गुरमत संगीत की गहराई और सामूहिक आध्यात्मिक अनुभव को दर्शाती हैं। इस प्रकार यह शोध यह स्थापित करता है कि गुरमत संगीत की गायक शैलियाँ सिख जीवन-पद्धति का अभिन्न अंग हैं, जो सामाजिक अवसरों को आध्यात्मिक अर्थ प्रदान करती हैं।

कुंजी शब्द: गुरमत संगीत, गुरबाणी कीर्तन, गायन शैलियाँ, सिख सामाजिक परंपराएँ, धार्मिक संगीत, शबद गायन, आध्यात्मिकता, सिख संस्कार, सामाजिक रीति-रिवाज, गुरु ग्रंथ साहिब, सांस्कृतिक परंपरा

भूमिका

गुरमत संगीत की परंपरा सिख धर्म और सिख जीवन-दर्शन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग है। यह केवल संगीत की एक शैली नहीं, बल्कि आध्यात्मिक चेतना, भक्ति, सामाजिक मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत का जीवंत माध्यम है। सिख धर्म में संगीत को ईश्वर तक पहुँचने का सर्वोत्तम साधन माना गया है। इसी कारण श्री गुरु ग्रंथ साहिब की समस्त बाणी को विभिन्न रागों में संकलित किया गया है, ताकि मनुष्य केवल शब्दों को पढ़े ही नहीं, बल्कि उन्हें संगीत के माध्यम से अनुभव भी कर सके। गुरमत संगीत आत्मा को प्रभु के साथ जोड़ने, मन को शुद्ध करने तथा मानव जीवन में नैतिक और आध्यात्मिक संतुलन स्थापित करने का कार्य करता है।

सिख जीवन के प्रत्येक चरण जन्म, नामकरण संस्कार, अमृत संस्कार, विवाह, धार्मिक पर्व, दैनिक अरदास तथा मृत्यु तक हर अवसर पर शबद-कीर्तन का विशेष स्थान है। नवजात शिशु के जन्म पर गुरबाणी का पाठ और कीर्तन वातावरण को आध्यात्मिकता से भर देता है। विवाह के समय "लावां" का गायन केवल एक सामाजिक रस्म नहीं, बल्कि दो आत्माओं के आध्यात्मिक मिलन का प्रतीक माना जाता है। इसी प्रकार मृत्यु के अवसर पर भी

*Corresponding Author Email: shupreet@gmail.com
Published: 30 May 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i5.45767
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

गुरबाणी के शबद मनुष्य को जीवन की नश्वरता और प्रभु की इच्छा को स्वीकार करने की प्रेरणा देते हैं। इस प्रकार गुरमत संगीत मनुष्य के पूरे जीवन-चक्र को आध्यात्मिक भावनाओं से जोड़ता है।

सिख धर्म में हर समय प्रभु-स्मरण और नाम-सिमरन पर विशेष बल दिया गया है। गुरु साहिबानों ने कीर्तन को ईश्वर की भक्ति का सर्वोच्च मार्ग बताया है। गुरबाणी में वर्णित शबद केवल धार्मिक उपदेश नहीं हैं, बल्कि वे मनुष्य के दैनिक जीवन के लिए नैतिक मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं। जब इन्हें रागों और तालों में गाया जाता है, तब उनका प्रभाव और भी गहरा हो जाता है। कीर्तन सुनने और गाने से मन में शांति, विनम्रता, प्रेम और भक्ति की भावना उत्पन्न होती है। यही कारण है कि गुरुद्वारों में कीर्तन को सबसे प्रमुख स्थान प्राप्त है और संगत सामूहिक रूप से इसमें भाग लेकर आध्यात्मिक आनंद का अनुभव करती है।

यदि हम श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी को सामाजिक जीवन के संदर्भ में समझें, तो यह स्पष्ट होता है कि गुरु साहिबानों ने मनुष्य को एक संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा दी है, जिसमें आध्यात्मिकता और सामाजिकता दोनों का सुंदर समन्वय हो। गुरबाणी मनुष्य को सत्य, सेवा, समानता, भाईचारे और मानवता का संदेश देती है। गुरमत संगीत इन मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है। यह केवल व्यक्तिगत साधना तक सीमित नहीं, बल्कि सामूहिक चेतना को भी जागृत करता है।

गुरमत संगीत की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें प्रत्येक भावना और अवसर के अनुरूप उपयुक्त शबद और राग निर्धारित किए गए हैं। आनंद और उत्सव के अवसरों पर ऐसे रागों का प्रयोग किया जाता है जो उल्लास और उत्साह की भावना उत्पन्न करें, जबकि विरह, चिंतन या दुख के अवसरों पर गंभीर और शांत रागों का गायन किया जाता है। इस प्रकार गुरमत संगीत केवल मनोरंजन नहीं करता, बल्कि मनुष्य की भावनाओं को आध्यात्मिक दिशा प्रदान करता है। इसमें भक्ति, शांति और आत्मिक आनंद की ऐसी लय विद्यमान रहती है जो मनुष्य को भीतर से संतुलित और शांत बनाती है।

अंततः कहा जा सकता है कि गुरमत संगीत सिख धर्म की आत्मा है। यह केवल धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि एक जीवन-पद्धति है जो मनुष्य को ईश्वर के निकट ले जाकर उसे नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध बनाती है। गुरबाणी और संगीत का यह अद्भुत संगम मानव जीवन को प्रेम, शांति, सेवा और भक्ति के मार्ग पर अग्रसर करता है।

उद्देश्य

1. गुरमत संगीत की गायन शैलियों का अध्ययन करना

2. सामाजिक रीति-रिवाजों में कीर्तन की भूमिका को स्पष्ट करना

3. विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले शबदों की परंपरा का विश्लेषण करना

4. गुरमत संगीत के आध्यात्मिक एवं सामाजिक महत्व को समझना

शोध विधि

यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें गुरबाणी तथा पारंपरिक कीर्तन शैलियों का अध्ययन किया गया है।

सामाजिक जीवन से संबंधित कीर्तन परंपरा

जन्म समारोह की कीर्तन परंपरा:

सिख धर्म में बच्चे का जन्म ईश्वर का दिया हुआ अनमोल उपहार माना जाता है। इस खुशी के मौके पर शबद कीर्तन के जरिए भगवान का धन्यवाद किया जाता है और उनकी कृपा के लिए आभार प्रकट किया जाता है।

इस अवसर पर केवल धन्यवाद के शब्द ही नहीं बोले जाते, बल्कि बच्चे के जन्म से जुड़े विशेष शबद और गीत भी गाए जाते हैं, जिनसे घर का वातावरण भक्तिमय और आनंदमय बन जाता है, जैसे:

"पूता माता की आसीस,

निमख ना बिसरौ तुम को हर हर

सदा भजो जगदीस||१||[1"]

"सतगुर साचै दीया भेज,

चिर जीवन उपजेय संजोग ।।[2]

इत्यादि यह परंपरा अब स्थापित हो चुकी है और इसका गायन अति आवश्यक समझा जाता है।

सगाई और मिलनी के समय की कीर्तन परंपरा:

सिख विवाह से पहले सगाई की रस्म होती है। इस अवसर पर शबद कीर्तन किया जाता है, जिसमें खुशी और आशीर्वाद से जुड़े शबद गाए जाते हैं। आम तौर पर यह शबद गाया जाता है—

"सत संतोख कर भाओ कुड़म कुड़माई आया बल राम जीओ।

संत जना कर मेल गुरबाणी गावाईया बाल राम जिओ"।।[3]

जब विवाह के बाद लड़के वाले लड़की के घर आते हैं, तो उस समय "मिलनी" की रस्म होती है। इस मौके पर लड़की वालों की ओर से वाद्यों के बिना यह शबद गाने की परंपरा है—

"हम घर साजन आए साचे मेल मिलाए।"[4]

आनंद कारज (विवाह समारोह) की कीर्तन परंपरा :

गुरमत संगीत परंपरा में सिख विवाह को "आनंद कारज" कहा जाता है, जिसका अर्थ है—आनंदमय कार्य। यह पूरा समारोह श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की उपस्थिति में होता है।

हिन्दू धर्म में जिस तरह सात फेरों की परंपरा होती है उसी प्रकार सिख धर्म मे चार लाँव की प्रथा से विवाह कार्य सम्पन्न होता है। श्री गुरु राम दास जी द्वारा रचित चार "लावां" (श्लोक) का विशेष महत्व है, जिन्हें विवाह के दौरान पढ़ा और गाया जाता है। इन लावों के माध्यम से पति-पत्नी के रिश्ते को आत्मा और परमात्मा के मिलन के रूप में समझाया गया है।

विवाह की शुरुआत में ईश्वर से प्रार्थना करते हुए यह शबद गाया जाता है—

"कीता लोड़िये कम, सो हर पह आखिये।

कारज देह स्वार सतगुर सच साखीये "[5]

जब लड़की के पिता द्वारा "पल्ला" पकड़ाया जाता है, उस समय भी विशेष शबद गाए जाते हैं, जैसे—

"उसतत निंदा नानक जी मै हभ वंजाई छोड़ेया हभ किछ तिआगी॥

हभे साक कुड़ावे डिठे तौ पलै तैडे लागी"॥[6]

इसके अलावा अवसर के अनुसार अन्य मंगलमय शबद भी गाए जाते हैं, जैसे—

"गाओ गाओ री दुल्हनी मंगलाचार, मेरे गृह आए राजा राम भतार।"[7]

इसके बाद "लावां" का पाठ होता है। हर लाव के साथ वर-वधू श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के चारों ओर फेरे (परिक्रमा) लगाते हैं। यह क्रम चार बार दोहराया जाता है।

अंत में "आनंद साहिब" का गायन होता है, फिर—

"विआह होआ मेरे बाबला गुरमुखे हर पाएआ

अज्ञान अंधेरा कटेया गुर ज्ञान प्रचंड बलाएआ"॥[8]

शबद गाया जाता है और अरदास के साथ समारोह समाप्त होता है।

इस प्रकार, गुरमत संगीत की परंपरा में सिख विवाह एक आध्यात्मिक, सरल और संगीत से जुड़ा पवित्र संस्कार माना जाता है।

मृत्यु के बाद की रस्मों में कीर्तन की परंपरा:

गुरमत संगीत में सुख और दुख—दोनों ही अवसरों पर ईश्वर का स्मरण करना और उनके गुणों का गुणगान करना बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसी तरह, जब किसी व्यक्ति का देहांत होता है, तब भी शबद कीर्तन के माध्यम से परमात्मा को याद किया जाता है और मन को शांत किया जाता है।

अंतिम संस्कार के समय श्मशान घाट पर शबद गाए जाते हैं, विशेष रूप से "मारू दी वार" का गायन किया जाता है। यह शबद जीवन की सच्चाई और संसार की नश्वरता (क्षणभंगुरता) को समझाते हैं।

इन शबदों में यह संदेश दिया जाता है कि दुनिया की मोह-माया अस्थायी है और मनुष्य को अपने जीवन में अच्छे कर्म करने चाहिए। जैसे—

"मन की मन ही माहे रही॥

ना हर भजे न तीरथ सेवे चोटी काल गही॥१॥रहाओ"॥[9]

"राम गएओ रावण गएओ जा कॉ बोह परवार॥

कहो नानक थिर किछ नही सुपने जिउ संसार"॥

"जो उपजेओ सो बिनस है परो आज कै काल॥

नानक हर गुन गाए ले छाड सगल जंजाल"॥[10]

"जगत महि झूठी देखी प्रीत॥
अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत"॥[11]

इन पंक्तियों के माध्यम से समझाया जाता है कि संसार के रिश्ते और प्रेम भी अस्थायी हैं, इसलिए मनुष्य को ईश्वर का नाम स्मरण करना चाहिए। इसी प्रकार अन्य शबदों में भी यह बताया जाता है कि मनुष्य खाली हाथ आता है और खाली हाथ ही जाता है—

"नांगे आवन, नांगे जाना॥

कोए न रह है राजा राना"॥

इन सबका मुख्य उद्देश्य यह है कि व्यक्ति जीवन की सच्चाई को समझे, अहंकार और मोह को त्यागे और ईश्वर की भक्ति में लीन रहे।

अंत में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी से "आनंद साहिब" का पाठ गायन किया जाता है और अरदास के साथ यह रस्म पूरी की जाती है।

इस प्रकार, गुरमत संगीत मृत्यु के समय भी मन को संभालने, सत्य को स्वीकार करने और ईश्वर से जुड़ने का मार्ग दिखाता है।

ग्रह प्रवेश के संदर्भ में गुरबाणी कीर्तन परंपरा

सिख परंपरा में नया घर बनाना या उसमें प्रवेश करना (गृह प्रवेश) केवल एक सांसारिक काम नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक अवसर भी माना जाता है। इस मौके पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में गुरबाणी का पाठ और कीर्तन किया जाता है, ताकि घर में शांति, सुख और ईश्वर की कृपा बनी रहे।

आम तौर पर इस अवसर पर **शबद कीर्तन**, **अखंड पाठ** या **सहज पाठ** रखा जाता है। कीर्तन की शुरुआत में घर की खुशहाली, शांति और ईश्वर के आशीर्वाद से जुड़े शबद गाए जाते हैं।

उदाहरण के तौर पर कुछ प्रचलित शबद—

मोहन घर आवोह करो जोदरिया॥

आज हमारे ग्रह बसंत॥

लख खुशियां पातशाइयाँ जे सतगुर नदर करे॥

सुखमनी सुख अमृत प्रभ नाम भगत जना के मन बिसराम॥

कीर्तन के दौरान रागी सिंह सरल और भावपूर्ण शैली में शबद गाते हैं, ताकि सभी लोग आसानी से जुड़ सकें। इसके बाद "आनंद साहिब" का पाठ और अंत में अरदास की जाती है।

इस प्रकार, गुरमत संगीत की परंपरा में नया घर केवल रहने की जगह नहीं, बल्कि एक ऐसा स्थान माना जाता है जहां गुरबाणी के माध्यम से आध्यात्मिक वातावरण बनाया जाता है और परिवार का जीवन ईश्वर से जुड़ा रहता है।

कार्य के संदर्भ में गुरबाणी कीर्तनः

सिख परंपरा में किसी भी नए कार्य की शुरुआत ईश्वर के स्मरण से करना शुभ माना जाता है। जब भी कोई नया काम या नौकरी की शुरुवात करनी होती है तब लोग इस मंगल कार्य की आरंभता एवं कुशलता के लिए अखंड

पाठ साहिब या सुखमनी साहिब का पाठ करवाते हैं जिसमें उस अकाल पुरख परमात्मा का शुक्राना अदा किया जाता है इस अवसर पर गायन की जाने वाले शबद इस प्रकार हैं;-

"जो जन तुमरी भगत करनते तीन के काज स्वारता"॥

"सतगुर अपने सुनी अरदास॥ कारज आएआ सगला रास"॥

इसी तरह, जब किसी शिक्षण संस्थान में नया सत्र शुरू होता है, तो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में गुरबाणी का पाठ और शबद कीर्तन किया जाता है, ताकि पूरा सत्र ज्ञान, अनुशासन और सकारात्मकता के साथ शुरू हो।

इस अवसर पर आमतौर पर एक **दीवान (धार्मिक सभा)** सजाया जाता है, जिसमें रागी सिंह गुरबाणी के ऐसे शबद गाते हैं जो ज्ञान, विद्या और सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।जैसे :-

"विद्या विचारी तां परऑपकारी"॥

रैन-सभाई कीर्तन परंपरा :

रैन-सभाई कीर्तन सिख परंपरा में एक विशेष प्रकार का कीर्तन होता है, जो पूरी रात (रात भर) किया जाता है। "रैन" का अर्थ है रात और "सभाई" का अर्थ है पूरी—अर्थात पूरी रात चलने वाला कीर्तन। यह कीर्तन संगत को आध्यात्मिक रूप से जोड़ने और नाम सिमरन में लीन करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

इस कीर्तन का आयोजन प्रायः गुरुद्वारों या विशेष धार्मिक अवसरों पर किया जाता है, जहाँ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में रागी सिंह पूरी रात शबद कीर्तन करते हैं।

रैन-सभाई कीर्तन में ऐसे शबद अधिक गाए जाते हैं, जो मन को ईश्वर में जोड़ते हैं, जैसे—

'राम सिमर राम सिमर ए है तेरो काज है'॥

'रैन दिनस परभात तू है ही गावना'॥

'गुण गावां दिन रैण एतै कम्म लाए'॥

अंत में सुबह के समय "आसा दी वार" का कीर्तन होता है, और फिर "आनंद साहिब" तथा अरदास के साथ कार्यक्रम समाप्त किया जाता है।

इस प्रकार, रैन-सभाई कीर्तन गुरमत संगीत की एक गहन आध्यात्मिक परंपरा है, जो पूरी रात व्यक्ति को ईश्वर के नाम में जोड़कर आत्मिक शांति और आनंद प्रदान करती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि गुरमत संगीत की गायक शैलियाँ सिख समाज के सामाजिक और धार्मिक जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जीवन के प्रत्येक चरण—जन्म, विवाह, मृत्यु या अन्य सामाजिक अवसरों—में गुरबाणी कीर्तन का समावेश इस परंपरा को विशिष्ट बनाता है। इन शैलियों के माध्यम से व्यक्ति न केवल अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता है, बल्कि आध्यात्मिक चेतना से भी जुड़ता है। गुरबाणी के शबद अवसरानुकूल संदेश देते हैं—जन्म पर कृतज्ञता, विवाह में आध्यात्मिक मिलन, मृत्यु पर वैराग्य और सत्य का बोध, तथा अन्य अवसरों पर ईश्वर के प्रति समर्पण।

गुरमत संगीत की यह परंपरा सामूहिकता, अनुशासन और आध्यात्मिकता का अद्वितीय संगम प्रस्तुत करती है। यह स्पष्ट होता है कि गुरमत संगीत केवल संगीत नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देने वाली एक सशक्त आध्यात्मिक प्रणाली है। अतः इसके संरक्षण, प्रचार-प्रसार और गहन अध्ययन की आवश्यकता है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इस समृद्ध परंपरा से जुड़ी रह सकें।

संदर्भ

1. गुजरी मोहल्ला पंजवा,आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ 496
2. राग आसा मोहल्ला 5, आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ 268
3. राग सूही मोहल्ला चौथा, आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ 773
4. राग सूही मोहल्ला पहला छँत घर दूजा, आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ 764
5. श्री राग की वार मोहल्ला चौथा, पाउड़ी घर पहला अंग. 91
6. रामकली मोहल्ला पंजवा, आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ 963
7. आसा कबीर जिओ आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ 482
8. श्री राग मोहल्ला चौथा घर दूजा छँत, आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ 602
9. सोरठ मोहल्ला नोवां आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ
10. सलोक मोहल्ला नौवां आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ 1429
11. देवगंधारी मोहल्ला नौवां वही 536